**International Journal of Arts, Humanities and Social Studies**
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 29-10-2021, Accepted: 15-11-2021, Published: 30-11-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 6-10

# हिंदू राष्ट्र व भारतीय आजादी के पुरोधा क्रांतिकारी वीर सावरकर

**चंद्र दास**
शोधार्थी, इतिहास, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

**सारांश**
वीर सावरकर ने भारत में हिंदू राष्ट्र का सपना संजोया था । वह प्रथम स्वतंत्रता सेनानी था जिसने भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए क्रांतिकारी संगठनों का सहारा लिया व भारत की आज़ादी की नींव रखी । इन्होंने भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता पर बल दिया और इसे स्वीकार भी किया था । सावरकर भारत राष्ट्र पुनरूत्थान और सांस्कृतिक श्रेष्ठता के भक्त थे और इसमें विश्वास रखते थे । इन्होंने भारतीय को संगठित करने और उनमें राष्ट्रवाद की भावना भरने का अथक प्रयास किया, जिसके लिए उन्हें अपना यौवन तक जेल में व्यतीत करना पड़ा और जो यातनाएं उन्होंने जेल में सहन की, उन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता । उनका दर्शन "संगठन" में शक्ति का था जिसका प्रचार उन्होंने आम जनमानस में करने का प्रयास किया । भारत का सांस्कृतिक, राजनैतिक व आध्यात्मिक विकास तभी संभव है जब हमें संपूर्ण भौगोलिक प्रांत के प्रति स्नेह व अनुराग होना चाहिए ।

**मूल शब्द:** हिंदू राष्ट्र, हिंदूत्व, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी, संगठन की शक्ति

## प्रस्तावना

हिंदू राष्ट्र की उत्पत्ति व सिद्धांत (सावरकर का विचार ) - वीर सावरकर जी ऐसे भारत का सपना संजोए थे जो अखंड हो और राष्ट्रीय एकता उसकी आत्मा हो । वे एक महान क्रांतिकारी थे जिनके ह्रदय में भारत और भारतीय समाज के प्रति गहरा प्रेम व संवेदनाएं थी । उनके दर्शन में हिंदूत्व की बात व हिंदू राष्ट्र से तात्पर्य संकीर्ण सांप्रदायिक विचारों से नहीं था, वे इस तरह की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर जनमानस को एकरूप देखना चाहते थे । हिंदू- मुस्लिम में वो परस्पर प्रेम व भातृत्व देखना चाहते थे । उनके अनुसार भारतीय वह है जो सिंधु नदी से समुद्र तक रचा बसा है, जिसमें राष्ट्रीय एकता, वैदिक संस्कृति, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अनुराग हो । सावरकर जी पहले ऐसे क्रांतिकारी वीर थे जिन्होंने सर्वप्रथम हिंदू राष्ट्र की कल्पना की और अखंड भारत का सपना संजोया था ।

सावरकर जी की पुस्तक ' हिंदूत्व ' वर्ष 1923 में प्रकाशित हुई। यह आधुनिक हिंदू राजनीतिक विचारधारा की श्रेष्ठ पुस्तक है । इसमें हिंदू को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा है

"आसिंधु-सिंधु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका
पितृभू: पुण्यभूशचैव सवै हिंदू रीति स्मृत: "।

अर्थात हिंदू वह है जो सिंधु नदी से समुद्रतर तक संपूर्ण भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि और पुण्य भूमि मानता है । हिंदूत्व

और हिंदू होने के तीन लक्ष्ण है । राष्ट्र अथवा प्रादेशिक एकता पहला तत्व है । जाति अथवा रक्त दूसरा तत्व है तथा तीसरा है संस्कृति । जिस व्यक्ति को हिंदू सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है, वह हिंदू हैं । इस प्रकार हिंदूत्व के भी तीन बंधन है - राष्ट्र, जाति और संस्कृति । जो मानव जाति के लिए जीवन प्रद और कर्तव्य सूचक तथा गौरवपूर्ण रहे हैं उन्हीं में से एक है ' हिंदूत्व '।

'हिंदू शब्द वेदकालीन ऋग्वेद में, सप्त हिंदव, सप्त हिंदू, हिंदू, सिंधु एवं इंडस नामक प्राचीन विशिष्ट संज्ञाओं को प्राप्त किए हुए है । इसके इतिहास को जानने के पश्चात स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि यह हिंदू मूलत: देश वाचक एवं राष्ट्र वाचक है । किसी विशेष धर्म मत का निदर्शक नहीं है । जिस प्रकार वेद नामक ग्रंथ के कारण उनके अनुयायियों को वैदिक जैसे नाम प्राप्त है वैसे ही हिंदू हैं, यह नाम किसी भी धर्म ग्रंथ से या धर्म संस्थापक से मूलतः निर्मित नहीं हुआ है । अतः हिंदूत्व के इतिहास से यथासंभव संबंधित होने वाली परिभाषा इसी प्रकार होगी कि असिंधु-सिंधु भारत भूमि का जिसकी पितृ भूमि एवं पुण्य भूमि है, वही हिंदू है ।

**सावरकर जी का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद**

1909 ईस्वी में प्रकाशित अपनी पुस्तक "The Indian War of Independence " में यह सिद्ध करते हैं कि 1857 ईस्वी का युद्ध भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, जो भारत से ब्रिटिश शासन काल को उखाड़ फैंकने का हिंदू-मुस्लिमों का सशक्त प्रयास था । इसी से सावरकर जी ने अपनी पुस्तक " भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ" में यह सिद्ध किया है कि आक्रमक यवन, शक, कुषाण, हुणों के स्वप्न को धराशाही करने व पानी फेरने के लिए चंद्रगुप्त, पुष्यमित्र, विक्रमादित्य एवं यशोवर्मन के पराक्रम और शौर्य से जो पौरूष पूर्ण विजय प्राप्त हुई, ये सब भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में दर्ज है । सावरकर जी की धारणा थी कि हमें सर्वप्रथम भारत के सुरक्षा तंत्र यानि सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करना होगा । भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित हो और भारत बहुमत की संस्कृति का प्रतीक बने यह सपना सावरकर जी ने संजोया था । इस भारतवर्ष को वे एक महान राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे । यदि हिंदू राष्ट्र का गौरव प्राप्त करना है तो हिंदुओं को एक ध्वज के नीचे अपने श्रेष्ठ राज्य की स्थापना करनी होगी । उन्होंने अपनी 59 वीं वर्षगांठ पर राष्ट्र को यह संदेश दिया कि राजनीति का हिंदूकरण हो । समय-समय पर ये हिंदुओं में व्याप्त अछूतों की समस्या का निराकरण करने के लिए जाति विरोधी आंदोलन संचालित करते रहे तथा इस क्षेत्र में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रशंसक तथा संरक्षक भी थे ।

" द वर्ल्ड " के संपादक अल्फ्रेड को सावरकर जी ने लिखा था -- मेरा विश्वास है कि मानव जाति को राष्ट्रवाद और संघवाद के द्वारा अर्थात बड़े-बड़े संगठनों के द्वारा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है किंतु वह लक्ष्य राष्ट्रवाद नहीं हो सकता। अंतिम लक्ष्य तो मानवतावाद ही है, अपने न्यून अथवा अधिक कुछ नहीं है । संपूर्ण राजनीतिक विज्ञान तथा कला का आदर्श मानव राज्य होना चाहिए । पृथ्वी हमारी जन्मभूमि है, मानव जाति हमारा राष्ट्र धर्म है । अधिकारों एवं कर्तव्यों की समानता पर आधारित मानव सरकार अंतिम राजनीतिक लक्ष्य होना चाहिए ।

सावरकर जी तुष्टिकरण में विश्वास नहीं रखते थे । उनके हिंदूवाद का संबंध मुख्यत: धर्म तथा धर्म विद्या से था। हिंदूत्व एक राजनीतिक धारणा है उसके अंतर्गत सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सभी पहलू आ सकते हैं । सावरकर जी ने राष्ट्रवाद, मानवतावाद तथा सार्वभौमवाद की दृष्टि में रखकर ही व्यक्त किया था ।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बारे में वीरों का आह्वान करते हुए सावरकर जी लिखते है," बहादुर शाह की अस्थियां अपनी कब्र से प्रतिशोध का आह्वान कर रही है । मंगल पांडे की आत्मा अभी सलीव पर से पवित्र मिशन की पूर्ति कर रही है । इसके साथ ही सावरकर पर इटली के प्रख्यात दार्शनिक और देशभक्त मैजिनी के विचारों का भी प्रभाव पड़ा है । कालाईल द्वारा लिखित फ्रांसीसी राज्य क्रांति की पुस्तक पर एक लेख लिखा जिसमें कहा गया कि " क्रांति अथवा इतिहास की मनुष्य के जीवन में उठा परक होती रहती है जिसके लिए

लाखों जुझते है तथा राजाओं के राज सिंहासन जिस कारण डगमगाते है " ।

विनायक दामोदर सावरकर ने हिंदू राष्ट्रवाद का आधुनिक भारतीय चिंतन में प्रतिपादन किया । सामाजिक क्रांति, राष्ट्रीयता, आर्थिक नीति, राष्ट्र भावना तथा विश्व संगठन संबंधी उनके विचार एक हिंदू घोषणा पत्र का सृजन करते हैं। सावरकर ने भारत भूमि पर निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को हिंदू की संज्ञा दी । भाई परमानंद तथा स्वामी श्रद्धानंद ने सावरकर के हिंदूत्व संबंधी चिंतन को हिंदू नव प्रभात का प्रतीक माना था । सावरकर का राष्ट्रवाद आक्रामक राष्ट्रवाद नहीं था और न ही उनका उद्देश्य अल्पसंख्यकों को कुचलने का था, वो मानते थे कि मेरा प्रयोजन किसी से कुछ छिनने का नहीं है । ये हिंदू- मुस्लिम परस्पर एकता के पक्षधर थे । सावरकर ने अपनी हिंदू राष्ट्र की अवधारणा में सदैव निष्ठा रखी । उनका मानना था कि भारत हिंदू की पवित्र और पितृ भूमि है जो कि अखंड थी और रहेगी । इनका भारत ऐसे लोकतांत्रिक राज्य का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें देश के विभिन्न धर्मावलंबियों तथा विभिन्न प्रज्ञानियों को पूर्ण समानता के धरातल पर रखा गया है और सभी को स्वतंत्र नागरिक होने के नाते अपने उत्तरदायित्व का वहन करते हुए पूर्णतः राज्य के प्रति निष्ठावान होना चाहिए । सावरकर के सपनों का भारत विश्व संगठनों में पूर्ण निष्ठा रखता है क्योंकि इनके अनुसार पृथ्वी हम सभी की मां है और मानवतावाद मनुष्य का परम धर्म है तथा देश प्रेम है। उन्होंने योग विज्ञान को मानवीय जीवन का सर्वोच्च वरदान मानते हुए इसे सदैव मानवता के लिए श्रेष्ठ माना है। सावरकर जी जागृत कुंडलिनी के माध्यम से प्राप्त पराचेतन आनन्द हिंदू अथवा हिंदू सभी मानवों के लिए एक उच्चतम आदर्श स्वीकार करते हैं ।

इस तरह सावरकर जी ने भारत की स्वतंत्रता व अखंडता को सदैव अपने राजनीतिक जीवन का लक्ष्य माना तथा हिंदू महासभा के मूर्धन्य नेता बने रहे । सावरकर जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टिकरण, सांप्रदायिक घोषणा, साइमन कमीशन, जातीय जनगणना, राष्ट्रीय लिपि, राष्ट्र भाषा, राष्ट्रीय गीत आदि अनेक मुद्दों का विरोध जीवन पर्यंत करते रहे । वे सर्व मान्य राज्य के हितैषी थे न कि संकीर्ण राष्ट्रवाद के खलनायक । ये भारत राष्ट्र को शिखर पर ले जाने के प्रबल समर्थक थे ।

**वीर सावरकर जी एक क्रांतिकारी के रूप में**

क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र ( नासिक ) जनपद के भागुर देहात में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ । इनके माता-पिता धार्मिक तथा कट्टर हिंदूत्व विचारों के थे और इन विचारों का प्रभाव इन पर भी पड़ा । इनके जीवन पर रामायण, महाभारत, शिवाजी व पेशवा बाजीराव जी की कहानियों का गहरा प्रभाव पड़ा । वे अपनी कुर देवी के परम भक्त थे, इनके जीवन को हम तीन भागों में विभाजित करते हैं । पहला 1883-1911,1911-1923 तथा तीसरा 1923-1966 तक ।

1900 ईस्वी में सावरकर ने मित्र मेला नामक गुप्त संगठन की स्थापना की, यही संगठन आगे चलकर 1904 ईस्वी में अभिनव समाज के रूप में परिवर्तित हुआ । यह संस्था संपूर्ण पश्चिम व मध्य भारत में तथा उसके पश्चात गदर पार्टी के रूप में इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, हांग कांग, सिंगापुर व बर्मा इत्यादि देशों में सक्रिय रही । इसका प्रयोजन भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना था । सावरकर ने 8 मई 1908 को इंडियन हाऊस लंदन में 1857 के स्वतंत्रता दिवस को मनाया, उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि 1857 का आंदोलन अंग्रेजों के विरुद्ध कोरा विद्रोह नहीं था बल्कि स्वतंत्रता के लिए पहला स्वतंत्रता संग्राम था । 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर उन्होंने एक पुस्तक लिखी लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उसे जब्त कर लिया और इसके आरोप में 1910 में ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । जब इन्हें भारत लाया जा रहा था तो जलयान से कूदकर जान निकले, लेकिन कुछ समय पश्चात इन्हें फ्रांस से गिरफ्तार कर लिया गया । दो अभियोग के जुर्म में इन्हें आजीवन कारावास में रहने की सज्जा मिली । करीब पच्चास वर्षों तक कारावास में रहना पड़ा । 1923 में इन्हें अंडमान से

रत्नगिरि कारावास के लिए शिफ्ट किया गया और 1937 को इन्हें रिहा किया गया । उन्होंने फिर भी आजादी हेतु संघर्ष को जारी रखा और बाल गंगाधर तिलक जी की विचारधारा का प्रचार प्रसार करते रहे उसके पश्चात हिंदू महासभा की सदस्यता ग्रहण की । 1937-44 तक हिंद सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया । अंततोगत्वा 26 फरवरी 1966 को भारत मां के इस महान सुपूत, वीर क्रांतिकारी देश भक्त का देहावसान हो गया । भारत मां की निस्वार्थ भाव से सेवा और उनके बलिदान से भारतवर्ष की वर्तमान और भावी मानवीय नस्लें सदैव राष्ट्र प्रेम के लिए अविरल प्रेरणा लेती रहेगी ।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वीर सावरकर की हिंदू राष्ट्र व भारतीय आजादी के पुरोधा के रूप में किए गए कार्य अविस्मरणीय है । उनके विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक है और पूर्णतः सार्थक है क्योंकि हिंदू धर्म और हिंदूत्व में बुनियादी अंतर यह है कि हिंदू धर्म का अर्थ हिंदू आस्था से है परंतु हिंदूत्व एक राजनीतिक विचारधारा है जो भारत में हिंदू राष्ट्र स्थापित करना चाहती है । हिंदू धर्म की कोई राजनीतिक सूची नहीं है बल्कि हिंदूत्व की एक विशेष राजनीतिक कार्यसूची है । वीर सावरकर ने भारत की सांस्कृतिक एकता पर बल दिया था और इसे स्वीकार भी किया । सावरकर भारत राष्ट्र के पुनरूत्थान और सांस्कृतिक श्रेष्ठता के परम भक्त थे और इसमें विश्वास भी रखते थे । उन्होंने भारतीयों को संगठित करने के लिए, उनमें राष्ट्रवाद की भावना जागृत करने का अथक प्रयास किया जिसके लिए अपने जीवन का अधिकांश वक्त कारावास में ही व्यतीत करना पड़ा । उनका दर्शन ' संगठन में शक्ति ' का था जिसका उन्होंने आम जनमानस में खूब प्रचार व प्रसार किया । ये मानते थे कि भारत राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब सभी संगठित होकर आगे बढ़ेंगे, सभी में परस्पर प्रेम होगा, जात- धर्म से जब तक ऊपर नहीं उठ पाएंगे तब तक सुदृढ़ राष्ट्र बनने की कल्पना भी नहीं की जा सकती । अतः इस तरह की ये बेकार चीजें जो किसी भी राष्ट्र को एकजुट नहीं होने देती, परस्पर हम धर्म, संप्रदाय के चक्कर में ही विचरण करते रहते हैं जिससे राष्ट्र निर्माण की गति अवरूद्ध हो जाती है क्योंकि इसमें फिर व्यक्ति केवल अपनी जाति, धर्म को बढ़ा करने के चक्कर में दूसरों को सदैव नीचा दिखाने की कोशिश में सक्रिय रहता है । सावरकर जी इन सबसे ऊपर उठकर जनमानस को एकरूप देखना चाहते थे । यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारतवर्ष की तस्वीर और तकदीर को बदलने में उनके अमूल्य और अविस्मरणीय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, आज भी वो हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है ।

## संदर्भ सूची


1. विनायक दामोदर सावरकर, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, प्रभात प्रकाशन (2020) पृ. सं 78
2. शिव मणि यादव, वीर सावरकर, ऋषभ प्रकाशन, 2013, पृ. सं . 3
3. वही पृ सं,9
4. वही पृ. सं.13
5. Shashi Tharoor, The Battle of Belonging on Nationalism patriotism and what it means to be indian (aleph book, page no 5,6
6. Kanwar Chander deep singh, इतिहास दिवाकर, इतिहास शोध संस्थान, अंक अप्रैल से जुलाई ) पृ. सं. 33
7. वही पृ सं 34
8. Dr Vikram sampat, revolutionary leader Vinayak Damodar Savarkar. Indian foundation journal, July –August, 2017, 37.
9. Shri Krishan, Discourse on modernity gandhi and Savarkar, studies in history,2013:29;61-85.
10. Manisha G sadafule, amit P shesh, philosophical, dimension reflected in the literature of Veer Veenayakb Savarkar (IJSEM) vol-5, issue -10, Oct 2020.
11. प्रो० प्यार सिंह ठाकुर, भारतीय आजादी के पुरोधा वीर सावरकर, हिम प्रस्थ, अगस्त-सितंबर,2018,पृ. सं.18
12. अप्रकाशित शोध, राष्ट्रवाद के अग्रदूत के रूप में वीर सावरकर

**13.** डॉ विजय प्रताप सिंह, who is भारत माता, स्टार लेट प्रकाशन, 2019, पृ. सं .7